सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़द्र

शब-ए-क़द्र

पूरा सफ़र — एक रात जो पूरी उम्र से बेहतर —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 97 • 5 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना अंज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्र
1. बेशक हमने इसे शब-ए-क़द्र में उतारा।

व मा अद्राक मा लैलतुल्-क़द्र
2. और आपको क्या मालूम कि शब-ए-क़द्र क्या है?

लैलतुल्-क़द्रि ख़ैरुम्-मिन अल्फ़ शह्र
3. शब-ए-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है।

तनज़्ज़लुल्-मलाइकतु वर्-रूहु फ़ीहा
4. उस रात फ़रिश्ते और रूह उतरते हैं।

सलामुन हिय हत्ता मत्ल'इल्-फ़ज्र
5. वो सलामती है, तुलू-ए-फ़ज्र तक।

अल्लाहुम्म इन्नक 'अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल्-'अफ़्व फ़'फ़ु 'अन्नी
नबी ﷺ ने आइशा (रज़ि०) को यही दुआ सिखाई।

वो रात जब क़ुरआन उतरा

बेटा, यह सूरह सिर्फ़ पाँच आयतों की है — और यह एक ऐसी रात का बयान है जो अक्सर इंसानी ज़िंदगियों से ज़्यादा क़ीमती है।

'इन्ना अंज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्र — बेशक हमने इसे शब-ए-क़द्र में उतारा।'

ग़ौर कीजिए, बेटा, अल्लाह ने यह नहीं बताया कि 'इसे' से मुराद क्या है — वो बस फ़रमाते हैं 'अंज़ल्नाहु', हमने इसे उतारा। उलमा कहते हैं यह एक क़िस्म की तकरीम है: चीज़ इतनी अज़ीम है कि उसके ता'आरुफ़ की ज़रूरत ही नहीं। यह क़ुरआन है।

और उलमा बयान करते हैं कि क़ुरआन दो मरहलों में उतरा: पहले, वो लौह-ए-महफ़ूज़ से आसमान-ए-दुनिया पर इसी एक रात में मुकम्मल उतारा गया — और फिर तेईस साल में नबी ﷺ पर थोड़ा थोड़ा कर के, हालात के मुताबिक़ नाज़िल हुआ।

बेटा, महसूस कीजिए कि यह आयत असल में क्या कह रही है: इस रात की अज़मत मौसम या सितारों की वजह से नहीं है। यह इसलिए अज़ीम है कि यही वो रात है जब इंसानियत की हिदायत उतारी गई। किसी रात को उसके अंदर होने वाले वाक़िए से शरफ़ मिलता है — और किसी रात में इससे बड़ा वाक़िआ कभी नहीं हुआ।

'व मा अद्राक मा लैलतुल्-क़द्र — और आपको क्या मालूम कि शब-ए-क़द्र क्या है?' बेटा, अब तक आप यह अंदाज़ पहचानते हैं: जब भी अल्लाह यह पूछते हैं, जवाब हमारी रसाई से बाहर होता है।

और ख़ुद लफ़्ज़ 'क़द्र' के दो मानी हैं, और दोनों सही हैं। इसका मतलब है तक़दीर और अंदाज़ा करना — क्योंकि इसी रात आने वाले साल के फ़ैसले तक़सीम किए जाते हैं और फ़रिश्तों के सुपुर्द किए जाते हैं। और इसका मतलब है क़द्र-ओ-क़ीमत और शरफ़ — एक बेशुमार क़ीमत वाली रात, और वो रात जो हर उस शख़्स को क़द्र अता करती है जो उसमें खड़ा हो।

हज़ार महीनों से बेहतर

'लैलतुल्-क़द्रि ख़ैरुम्-मिन अल्फ़ शह्र — शब-ए-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है।'

बेटा, हिसाब आहिस्ता कीजिए, क्योंकि यह आपके रमज़ान के साथ सुलूक को ज़िंदगी भर के लिए बदल देगा। हज़ार महीने यानी तिरासी साल चार महीने। यह एक पूरी, लंबी इंसानी उम्र है।

तो जो शख़्स इस एक रात में क़याम करे — और अल्लाह उसे क़ुबूल फ़रमा लें — उसने उस शख़्स से ज़्यादा कमा लिया जिसने तिरासी साल इबादत की मगर यह रात न पाई। और लफ़्ज़ देखिए 'ख़ैरुन मिन' — बेहतर। बराबर नहीं। एक पूरी उम्र से ज़्यादा।

उलमा इस अता के पीछे एक वजह ज़िक्र करते हैं। रिवायत है कि नबी ﷺ को पिछली क़ौमों की लंबी उम्रें दिखाई गईं — वो लोग जिन्होंने सैकड़ों साल अल्लाह की इबादत की — और आपको अपनी उम्मत की फ़िक्र हुई, जिनकी उम्रें छोटी हैं और जो उन आँकड़ों का मुक़ाबला कभी नहीं कर सकते थे। तो अल्लाह ने इस उम्मत को शब-ए-

क़द्र अता फ़रमाई: एक ऐसी रात जिसके ज़रिए छोटी उम्र लंबी उम्र पर भारी पड़ सकती है।

बेटा, यह एक रहमत है जो ख़ास हमारे लिए है। हमारी उम्रें साठ सत्तर साल की हैं — मगर इस रात के साथ, वो मोमिन जो चंद रमज़ान में भी इसे पा ले, उसने उम्रें जमा कर लीं।

और नबी ﷺ ने बताया कि इसे कैसे कमाया जाए: 'जो शख़्स शब-ए-क़द्र में ईमान के साथ और अज्र की तलब में क़याम करे, उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।' दो शर्तें, बेटा: ईमानन — ईमान के साथ, उसके अज्र पर यक़ीन रखते हुए; और एहतिसाबन — सिर्फ़ अल्लाह से अज्र की तलब में, न कि एक रस्म या महफ़िल के तौर पर।

एक रात जो फ़रिश्तों से भर जाती है

'तनज़्ज़लुल्-मलाइकतु वर्-रूहु फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्र — उस रात फ़रिश्ते और रूह अपने रब की इजाज़त से हर मामले के लिए उतरते हैं।'

बेटा, उस रात ज़मीन का मंज़र तसव्वुर कीजिए। फ़रिश्ते उतर रहे हैं — और रिवायतों में आता है कि उस रात उनकी तादाद ज़मीन की कंकरियों से भी ज़्यादा होती है। उनमें 'अर-रूह' — ख़ुद जिब्रील (अलैहि0), जिनका ज़िक्र उनके मर्तबे की वजह से अलग से किया गया।

वो क्यों आते हैं? 'मिन कुल्लि अम्र' — हर मामले के लिए: साल के लिए तक़सीम शुदा फ़ैसले ले कर, और, जैसा रिवायतों में आता है, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों की महफ़िलों को घेरे हुए, और दुआओं पर आमीन कहते हुए।

बेटा, एक ऐसी रात के बारे में सोचिए जब आसमान फ़रिश्तों से भरा हो और ज़मीन सोते हुए लोगों से। कुछ तफ़रीह देख रहे हैं; कुछ झगड़ रहे हैं; कुछ बस सो रहे हैं। और चंद लोग — मस्जिद के किसी कोने में, किसी छोटे कमरे की जानमाज़ पर, एक माँ तहज्जुद के बाद सरगोशी करते हुए — जाग रहे हैं, और फ़रिश्ते उनके साथ हैं।

'सलामुन हिय हत्ता मत्ल'इल्-फ़ज्र — वो सलामती है, तुलू-ए-फ़ज्र तक।'

बेटा, पूरी रात एक लफ़्ज़ में बयान कर दी गई: सलाम। सलामती। मग़रिब से फ़ज्र तक, यह सलामती है — उतरती हुई सलामती, मोमिनीन को सलाम करते फ़रिश्ते, और उन लोगों के लिए हर शर और नुक़सान से हिफ़ाज़त जिनकी अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। और यह बिल्कुल फ़ज्र पर ख़त्म होती है, एक लम्हा बाद नहीं।

और ख़ूबसूरती देखिए, बेटा: सूरह का इख़्तिताम अज्र या सज़ा पर नहीं होता। इसका इख़्तिताम होता है 'सलामती... फ़ज्र तक' पर। पूरी रात उस शख़्स के लिए सुकून की एक चादर है जो इसे अपने रब के साथ गुज़ारता है।

इसे कैसे पाएँ

बेटा, अब अमली हिस्सा, क्योंकि अल्लाह ने हमें ठीक तारीख़ नहीं बताई — और ख़ुद यही एक रहमत है।

नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'इसे रमज़ान के आख़िरी दस दिन में तलाश करो' — और: 'इसे आख़िरी दस की ताक़ रातों में तलाश करो।' और एक रिवायत में, जब दो आदमी झगड़ पड़े, तो इसका ठीक इल्म उठा लिया गया, और आप ﷺ ने फ़रमाया: शायद यही तुम्हारे लिए बेहतर हो।

बेहतर क्यों, बेटा? क्योंकि अगर हमें तारीख़ मालूम होती, तो ज़्यादातर लोग एक रात इबादत करते और उनतीस रात सोते। इसे दस रातों में छुपा कर अल्लाह हमसे दस रातों की कोशिश करवा लेते हैं — और ख़ुद यही कोशिश मक़सद है। अज्र सिर्फ़ उस रात में कभी था ही नहीं; वो तलाश में भी है।

नबी ﷺ आख़िरी दस में 'अपना तहबंद कस लेते, रात को जागते, और अपने घर वालों को जगाते थे।' और आप इन दस दिनों में मस्जिद में ए'तिकाफ़ फ़रमाते थे, इसी की तलाश में।

और हमारी माँ आइशा (रज़ि0) ने पूछा: या रसूलल्लाह, अगर मुझे पता चल जाए कि कौन सी रात शब-ए-क़द्र है, तो मैं क्या कहूँ? आप ﷺ ने उन्हें सिखाया:

'अल्लाहुम्म इन्नक 'अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल्-'अफ़्च फ़'फ़ु 'अन्नी — ऐ अल्लाह, आप माफ़ करने वाले हैं, आपको माफ़ करना पसंद है, तो मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए।'

बेटा, इस दुआ को ग़ौर से देखिए। साल की सबसे अज़ीम रात, आसमान के दरवाज़े खुले, हर तरफ़ फ़रिश्ते, फ़ैसले लिखे जा रहे हैं — और माँगने की एक ही चीज़ क्या है? दौलत नहीं। कामयाबी नहीं। माफ़ी।

क्योंकि "अफ़्च', बेटा, एक ख़ास लफ़्ज़ है: इसका मतलब है कि अल्लाह गुनाह को बिल्कुल मिटा देते हैं — सिर्फ़ बख़्शते नहीं, बल्कि ऐसा मिटा देते हैं कि उसका ज़िक्र तक नहीं होता। और दुआ के अंदर वाली दलील देखिए: 'आपको माफ़ करना पसंद है।' आप किसी ना-राज़ी जज से गिड़गिड़ा नहीं रहे; आप उससे माँग रहे हैं जिसे ठीक वही काम पसंद है जो आप माँग रहे हैं।

तो बेटा, तीन चीज़ें ले कर चलिए: दस की दस रातें इबादत कीजिए ताकि आपसे छूट न जाए; इसे 'ईमानन वह्तिसाबन' कीजिए; और इस दुआ को वो जुमला बनाइए जो आप सबसे ज़्यादा दोहराएँ। एक क़ुबूल शुदा रात पूरी ज़िंदगी दोबारा लिख सकती है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. किसी रात की अज़मत उससे होती है जो उसमें हुआ — इस रात में इंसानियत की हिदायत उतरी।

2. एक क़ुबूल शुदा रात तिरासी साल पर भारी — छोटी उम्रों वाली उम्मत के लिए ख़ास रहमत।

3. इसे ईमान और तलब-ए-अज्र के साथ गुज़ारिए, पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

4. तारीख़ इसलिए छुपाई गई कि हम एक नहीं, दस रातों की कोशिश करें — तलाश ख़ुद इबादत का हिस्सा है।

5. उस रात ज़मीन फ़रिश्तों से भर जाती है; उन चंद लोगों में रहिए जो उनसे मिलने जागे हैं।

6. सबसे पहले "अफ़्व' माँगिए: 'अल्लाहुम्म इन्नक 'अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल-'अफ़्व फ़'फ़ु 'अन्नी।'

7. यह रात फ़ज्र तक 'सलाम' है — इसे उसकी याद के सुकून में गुज़ारिए, और उसका इख़्तिताम फ़ज्र बा-जमाअत पर कीजिए।

अल्लाहुम्म इन्नक 'अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल-'अफ़्व फ़'फ़ु 'अन्ना — या अल्लाह, हमें यह रात नसीब फ़रमाइए और हमें मुकम्मल माफ़ कर दीजिए। आमीन।